SHRI LAXMI NARSINGH STOTRA

श्री लक्ष्मी नृसिंह स्तोत्र और लाभ

श्रीमत्पयोनिधि- निकेतन चक्रपाणे, भोगीन्द्र-भोग-मणिरञ्जित-पुण्यमूर्ते ।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत, लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥१॥
ब्रह्मेन्द्र-रुद्रमरुदर्क-किरीटकोटि, सङ्घट्टिताङ्घ्रि-कमलामल-कान्तिकान्त ।
लक्ष्मीलसत्कुचसरोरुहराजहंस, लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥२॥
संसारघोरगहने चरतो मुरारे, मारोग्रभीकरमृग-प्रवरार्दितस्य ।
आर्तस्य मत्सरनिदाघ-निपीडितस्य, लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥३॥

संसारकूपमतिघोरमगाधमूलं, सम्प्राप्य दुःखशतसर्प-समाकुलस्य ।
दीनस्य देव कृपणा-पदमागतस्य, लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥४॥
संसारसागर-विशालकरालकाल नक्रग्रह-ग्रसननिग्रह विग्रहस्य ।
व्यग्रस्य रागरसनोर्मिनिपीडितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥५॥
संसारवृक्ष- भवबीजमनन्तकर्म शाखाशतं करणपत्र- मनङ्गपुष्पम् ।
आरुह्य दुःखफलितं पततो दयालो लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥६॥

संसारसर्प-घनवक्त्र-भयोग्रतीव्र, दंष्ट्राकराल-विषदग्ध-विनष्टमूर्तेः ।
नागारिवाहन सुधाब्धिनिवास शौरे लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥७॥
संसारदावदहना-तुरभीकरोरु ज्वालावलीभिरतिदग्ध-तनूरुहस्य ।
त्वत्पादपद्मसरसी- शरणागतस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥८॥
संसारजालपतितस्य जगन्निवास सर्वेन्द्रियार्त- वडिशार्थ- झषोपमस्य ।
प्रोत्खण्डित-प्रचुरतालुकमस्तकस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥९॥

संसारभीकर-करीन्द्र-कराभिघात , निष्पिष्ट-मर्मवपुषः सकलार्तिनाश ।
प्राणप्रयाण-भवभीति-समाकुलस्य, लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥१०॥
अन्धस्य मे हृतविवेक-महाधनस्य, चोरैः प्रभो बलिभिरिन्द्रियनामधेयैः ।
मोहान्धकूपकुहरे विनिपातितस्य , लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥११॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो ,वैकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन पुष्कराक्ष ।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव, देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम् ॥१२॥

यन्माययोर्जितवपुःप्रचुरप्रवाह, मग्नार्थमत्र निवहोरु-करावलम्बम् ।
लक्ष्मीनृसिंह-चरणाब्ज-मधुव्रतेन, स्तोत्रं कृतं सुखकरं भुवि शङ्करेण ॥१३॥

॥ इति श्रीमच्छंकराचार्याकृतं लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

पाठ की विधिः—भगवान् श्री लक्ष्म्मीनृसिंह का मानसिक स्मरण करते हुए इस स्तोत्र का पाठ करनाचाहिए। इसके नित्य पाठ से मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं तथा स्वास्थ्य लाभ भी प्राप्त होता है। यदि लगातार 41 दिनों तक नित्य इसके 11 पाठ किये जाये ंतो आर्थिक रूप से विशेष लाभ प्राप्त होता है।

– नृसिंह भगवान् की पूजा अर्चना मे स्वच्छता का विशेष ध्यान रखने की आवश्यक्ता होती है। इसलिए इस स्तोत्र का पाठ करते समय स्नान करके या हाथ पैर धो कर बैठना चाहिए।

विशेषः– यदि आप किसी विशेष समस्या के समाधान के लिए इसका पाठ कर रहे हैं तो अधिक जानकारी के लिए अथवा ज्योतिष सम्बन्धी परामर्श के लिए हमारे संस्थान http://www.astroprediction.com में सम्पर्क कर सकते हैं या आनलाइन कंसल्टेंसी बुक करवा सकते हैं। फोन– 9119119474